* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना।

दूहा ॥ भोजन मिस चालुक्क ने। [1]पाइक पाइक कीन ॥
ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै। करि जु निवंतन कीन ॥ छं० ॥ १०८ ॥
बरन राव रावन्न ढिंग। बर चालुक्क सु थान ॥
समर सिंघ चहुआन कों। न्योतन को बलवान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना।

कवित्त ॥ एक ग्रह बिच बीच। सुभर [2]सन्नाहति पंचै ॥
पंच घट्टि पंचास। बीर अंबी रज संचै ॥
तक्क लोह सह दीन। करै चालुक्क सु चल्लै ॥
आषेटक चहुआन। समर रावर बर मिल्लै ॥
भोजन्न भंति रस बीर बर। बर प्रबोध ग्रह दिसि चल्लिय ॥
मन तन्न सुष्प मिट्टै सघन। सुबर बीर संगह हल्लिय ॥छं०॥११०॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना।

दूहा ॥ आज हनंदे याप बर। ग्रह बड्डे बड़राइ ॥
समरसिंघ चहुआन मिलि। दुष्प हनंदे आइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष।

बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै। भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों। मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना।

गाम वाम पैसत न्रपति। बन न्रप बोलत सद्द ॥

* इस प्रबन्ध में चालुक्क शब्द से सारंग राव से ही अभिप्राय है।

(१) को. मो.-धाइक। (२) मो.-सन्नाहित।

फेरि बीर दष्षिन भयौ। बैरी करन निकंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुएं वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त ॥
भोजन पिधि विधि सकल भय। अकल अपूरब वत्त ॥ छं० ॥ ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त ॥ दै किपाट चिहुं कोद। राज मुक्यौ सु मंझ ग्रह ॥
ठाम ठाम सब सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि ॥
घोरंधार विहार। बिपन बर बर बन मुक्किय ॥
संझ सपत्ते राज। चूक चालुक्क सलुक्किय ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर पवास लोहान भर ॥
बर बंध उभै सेवक चिगट। समर काज उभ्भौ समर ॥छं०॥११५॥

दूहा ॥ तक्कि बक्कि उठ्ठे [1]सुभर। चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मची समुष। बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ॥ ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त ॥ चिहूं कोद बर सूर। तेग कढ्ढी सु हक्कि कर ॥
बज्र कढ्ढि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि ॥
लहि न और अवसान। कढ़ी बर [2]अभिभ सु सस्सी ॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बढ्ढी मन हस्सी ॥
कैधूं दुतड्डि बंदर सिरह। हलधर हल सिर झारयौ ॥
सामंत सठ्ठि ग्रह कूदि कैं। फिरि पारस अरि पारयौ ॥छं०॥११७॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीन बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि ॥

(१) ए. कृ. को.-समर। (२) ए. कृ. को.-आसि असे।

तेग हथ्थ झकझोर। बीर लिन्नों सु बथ्थ [1]भरि॥
दुतिय घात आघात। घाइ [2]अग्गा बर बाहै॥
कमल पंति दंती। समूह दारुन जल गाहै॥
घट घाव भंग भेदै नहीं। चौकट जल घट बूंद जिम॥
आहुट्ट उग्र साहस करिय। पच तरोवत अरिन तिम॥छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का *नागफनी से शत्रुओं को मारना।

दूहा॥ नागमुषी चहुआन लिय। अरिन करन्न सु दाह॥
[3]हह नंषि उचाइ अरि। ज्यों कल बंधि बराह॥ छं०॥ ११९॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना।

मोतीदाम॥ रन बीर रवद्द कहै कवि चंद। सु मोतिय दाम पयं पय छंद॥
कढ़ै बर आवध बज्जत तूर। उठे परसद्द महल्लन सूर॥
छं०॥ १२०॥
नचै बर उट्ठि धरं धर ह्वर। करै हक देषि उससि करूर॥
जु तक्कत अच्छर जालिन मड्डि। रही तिन मभ्भ सुकीव समुभ्भ॥
छं०॥ १२१॥
दिषी दिषि [4]सुक्किव अच्छरि जुथ्थ। उपावहि [5]मत्त जु सुंदर तथ्थ॥
उपावत मत्त सु छोड़ैंन घट्ट। चलंत है विड्डि अगम्मनि वट्ट॥
छं०॥ १२२॥
[6]अपज्जस किंत्ति तज्यौ अस राइ। चल्यौ अप अग्ग छुड़ावत जाइ॥
बरं कुलटा छंडि छंडि सु केउ। झुंझै उल कत्ति तज्यौ करि पेउ॥
छं०॥ १२३॥
जु पीय वियोग सह्यौ नह जाइ। चली बर नारि अमग्गन धाइ॥
लरंतह भूपति भान कुंआर। करै मनु [7]वज्जय बज्ज प्रहार॥
छं०॥ १२४॥

(१) ए. कृ. को.-परि। (२) मो.-लग्गा।
(३) मो.-हट्ट नंषिड। * 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष। (४) मो.-सुकवि,कुक्कवि।
(५) ए. को. मंत। (६) ए.- अयंजस। (७) मो.-वजूह।

लरै भर चालुक चंपत घट्ट। सचीरह नारि अगंम सुभट्ट॥
भ्रिगं भ्रिग लज्जन दच्छन जाइ। भजै क्रम सूर [1]चियं गय पाइ॥
छं० ॥ १२५॥

कढ़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन्न। उड़ै बर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न॥
सु उज्जल छोह चल्यौ रुधि छेदि। मनों जल गंग सु भारति भेदि॥
छं० ॥ १२६॥

तजै जर जम्म भिदै रवि जाइ। परै धर मुत्ति जु हूरन आइ॥
॥ छं० ॥ १२७॥

रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना।

कवित्त॥ बर बड़ गुज्जर राम। क्रहं वज्जिग बर धायौ॥
पीलवान अरियान। [3]पील अरि पूर लगायौ॥
नारिगोरि सा बात। तीर जल जोर सु बढ्ढी॥
मीन रूप रघुवंस। पूर सम्हौ अरि चढ्ढी॥
कल मलिनि कलिनि कलि कलन कल। लोह लहर सम्हौ हली॥
अरि घरा फुट्टि बर [4]धार सों। सुमन लोह उड्डै मिली॥छं०॥१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन।

पंच क्रमन दस हथ्थ। [5]लुथ्थि पर लुथ्थिय हुट्टिय॥
न को जियत संचयौ। न को जुझ्झयौ बिन षुट्टिय॥
कोन जम सु जुझ्झवै। वैर मंगै सु पुव्व अब॥
व्याज तत्त अप्पीय। मूल अप्पयौ कुटंब सब॥
अदिहार बीर चालुक्क कौ। नको षेत बिन मुक्कयौ॥
संभाग बीर चहुआन कौ। सबै सथ्थ झोरौ कियौ॥छं०॥१२९॥

(१) ए. कृ. को.-त्रियंअग (२) ए. कृ. को.-सक्रन्न। (३) ए.-पीर।
(४) ए.-धरा। (५) मो.-"लोथि पर लोथि"।

पज्जून राय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी बीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ [1]सुत पज्जून नरिंद। बीर कूरंभ नाम हर ॥
अस्त बस्त अरु सस्त। टूक लभ्भै न ढुंढ धर ॥
विहत बीच अरु षंड। एक [2]उग्गरि. षँडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय। नभ्भ कहि सहिस अत्ति हय ॥
ढुंढंत अत्ति न सुझि परै। लोह किरचि रच्यौ रह्यौ ॥
भेदयौ राह रुपह सु रवि। बरन बीर बैकुंठ गयौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार। सु इक्क रांयत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच। सेन संभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिंद। रैन [3]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए। चूक एकन ठट्टनवै ॥
उहिग दार पांवार पर। पहुर तीन तुच्यौ करन ॥
आचिज्ज सूर मंडल सुन्यौ। सहु सथ्थैं [4]बंध्यौ सुतन ॥छं०॥१३१॥

रेन पवांर (सामंत) की प्रशंसा।

कुंडलिया ॥ मरन न लड्डौ तुंग तिहि। सब सथ्थई पंवार ॥
सोमेसर नंदन [5]छला। गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार। तेग तोरिन बर जारन ॥
चूक मूक्कि चालुक्क। स्वामि कढ्यौ बर बारुन ॥
[6]है हलान हथ्थियन। रयन रायत्तन सिड्डे ॥
सह सथ्था तन ताइ०। तुंग तिन मरन न लड्डे ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का

---

(१) मो.-सत। (२) ए.-ठगरि। (३) मो.-रावन।
(४) ए. कृ. को.-मंडयौ। (५) ए. कृ. की.-कला। (६) मो.-हेसतथ्थान बंधेरन।

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना।

कवित्त ॥ बंध रेन लिय रज्ज। चाइ चालुक छंडायौ ॥
ढक्कि सेन संभरी। हेल हम्मीर बढ़ायौ ॥
षेल षग्ग षुमान। पान जोरैं जल पीनौ ॥
सो षीची परसंग। राइ तुल्लै दल लीनौ ॥
अंकुर्यौ अरिन रिनथंभ सौं। सजि जद्दव बीरन बलिय ॥
रवि राह सस्सि संमुह गहन। जानि छछुंदरि अप्पलिय ॥छं०॥१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए।

भयौ भूमि भूचाल। संघ समरी आहुट्टै ॥
सजि सद्दै सिंदूर। सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टे तेरह [1]तुरँब। सथ्थ बंबर बर धारी ॥
बार बार रावत्त। हत्त बर बाहर रारी ॥
अदभूत जुद्ध चहुआन किय। मिलि षुमान चल्ल्यौ षलह ॥
अजहूं सु अजब जुग्गिनि जगहि। पल संभरि पंषिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना।

कुंडलिया ॥ बंधे बर हुस्सेन। षान बल सुबर कुँआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह। कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि। मेछ संदरी बघेरी ॥
समरसिंह सुनि कूह। चियं बंधत फिरि हेरी ॥
[2]धीठ षान दै आन। हद्द अहरत्तन संधे ॥
धीठ जमन हंकार। समर हेतु बर बंधे ॥ छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-तुररा।　　(२) ए. पीठ।

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना ।

दूहा ॥ अमर बंध रष्षौ अमर । अगि दीनौ बर माल ॥
जस बेली चतुरंग कौं । बरन घल्लि उर माल ॥ छं० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ जसबेली [1]बरिगौ चतुरंगी । चढ़ि चौंडोल ग्रेह अनभंगी ॥
बरन राव रावल संजोगी । सु धर फेरि चालुक्क न भोगी ॥
छं० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है ।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि संदेह । सह सावह कवीयस ॥
पर्‌यौ बीर जद्दव । नरिंद चंदेल [2]छवीयस ॥
गूड़राइ सचसलह । जुद्ध लोहं लरि बित्ते ॥
मुर्‌यो सेन पुब्बहि । पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
[3]अप्पाह अप्प बीतक वित्यौ । बंधि चंदेल सज्जै सुहर ॥
आवद्ध बीर मत्तौ कहर । गही गल्ह बंधौ सु धर ॥ छं० ॥ १३८ ॥

पुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना ।

गाथा ॥ जित्ताराय पुमानं । निसानें सद्दयं धायं ॥
छुट्टा रन रनथंभं । षा षग्गे षीचियं रायं ॥ छं० ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥ षीचीराइ हमीर अवन्निय । दोइ चहुआन धरम्म भवन्निय ॥
चालुक्कां सों चूक सवन्निय । दुत्तिय दीपंता निरबन्निय ॥ छं० ॥ १४० ॥

कवित्त ॥ दूसासन् अंग में । राज विहंग गति कीनी ॥
मध्यदेश मालव नरिंद । हंसध्वज भीनी ॥
नीलध्वज कर धरिग । विप्र बंदन संपन्नौं ॥

(१) ए. कृ. को. षरिगौ । (२) ए. कृ. को.-सवीयस । (३) कृ. अप्पाह ।

नालिकेल तरू फूल। अनंद सौंनह सुभ किन्नौ॥
सत पच लगन लभ्भह भरियं। घरिय अठ्ठ तेरह तिनह॥
रनथंभ सेन संचरि न्रपति। करिय अवधि ताकरि रनह॥
छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना।

दूहा ॥ आगम बीर बसंत कौ। रन जित्त जुधवान॥
बर हंसावति सुन्दरी। चलि ब्याहे चहुआन॥ छं॰ ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन।

गाथा ॥ रंग सुरंग सुदीहं। ज्यों कुंजिन मेलयं सब्बं॥
बय रुष मुष अंकुरियं। सा मिलयं बंकुरी मुच्छं॥ छं० ॥ १४३ ॥

दूहा॥ मुच्छ रवन्निय राजमुष। बर बंधिग सुरतान॥
तीन दिनन आवन लगन। आय सगंध पुरान॥ छं० ॥ १४४ ॥

दोधक॥ ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय। राज रसं बरुनौं बरु जानय॥
नीति अनीति सुभं सरसानय। लभ्भरु कित्ति लही चहुआनय॥
छं० ॥ १४५ ॥

संपय राज स कोकिल संठिय। जानि जुवान न जानि सु पुठ्ठिय॥
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय। संक्रय गानकला कल सथ्थिय॥
छं० ॥ १४६ ॥

छंदह छंद रसे रस जानन। कंठ कला मधुरे मधु आनन॥
उद्दिम मेन उदार सुधारिय। [1]न्रज्जय रूप सरूप सुरारिय॥
छं० ॥ १४७॥

दूहा॥ श्रवन रवन अरु सिष भवन। पवन चिविध तन लग्ग॥
वापी कूप [2]तड़ाक द्दष। विधि ब्रंनन कवि लग्ग॥ छं० ॥ १४८॥

पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोषे से झांकना।

(१) ए. कृ. को.-नृयज्जय, नृयजय। (२) ए कृ.को.-सटाक।

सा सुंदरि हंसावती। सुनि श्रोतान सुरुष्य॥
बर दिष्टा नन मानियै। बेलां लग्गि गवष्य॥ छं०॥ १४९॥
सुनि आयौ चहुआन अप। गुरुजन बंध्यौ जानि॥
तब मति सुंदरि चिंतवै। भेदक गौष वषान॥ छं०॥ १५०॥

गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन।

कवित्त॥ पंथ बाल पिय झंकि। सुभ्रित विंटियं सु राजै॥
मनों चंद उड़गन विचाल। मेरह चढ़ि भाजै॥
सुनिय श्रवन दै सैन। अलिन अलिमैन सरोजं॥
रति मच्छर मति काम। जानि अच्छरि सुर सोजं॥
धावंत वेस अंकुरित वपु। बसि सैसव तिन बेस धुरि॥
श्रोतान सुष्य दिष्टान धनि। यह कहि चलि सैसव बहुरि॥
छं०॥ १५१॥

दूहा॥ प्रथम बत्त श्रोतान सुनि। सुष पै दिषहि सलोइ॥
सच्च बात झूठी चवौ। तब जिय सुष्य न होइ॥ छं०॥ १५२॥
सुनि श्रोतान सु मन्निय। दिषि दिष्टांत सचीय॥
बीज चंद पूरब्ब जिम। बधै कला मनि जीय॥ छं०॥ १५३॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी।

बर बेहरि देषी न्नपति। गौ न्निप न्निपबर थान॥
बालु सुअंबर काज कौं। बर बज्जे नीसान॥ छं०॥ १५४॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन।

आभूषन भूषन न्नपति। वैसंधि कहि न कविंद॥
कवि ब्रनन इह लग्गि चिय। ज्यों बढ़त लघु चंद॥ छं०॥ १५५॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन।

कवित्त॥ बर भूषन तजि बाल। सुबर मज्जन आरंभिय॥
सोइ छबि बर दिष्यनह। कोटि [1]ओपम पारंभिय॥

(१) मो.-उपमा।

बर सैसव बर चंपि। कंपि चिंहु कोद भुपायौ ॥
सो ओपम कविचंद। जौन्ह बूड़त नल धायौ ॥
बालपन बीर बर मिच पन। रबि ससि करि अंजुरि भरिय ॥
बय बाल [1]उबीचन प्रीति जल। सैसव तें हरई करिय ॥ छं० ॥१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बर सैसव अच्छर नहीं। जोवन जल बर मैन ॥
बाल घरी घरियार ज्यौं। नेह नीर बुड़ि नैन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा।

मोतीदाम ॥ कि बाल प्रसोद सु मज्जन चंद। सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद ॥
लटिं भिँजि बार रही लपटाइ। मनौ दिढ़ सुक्र लग्यौ ससि आइ ॥
छं० ॥ १५८ ॥
वि ओपम दै बरनै कविराज। द्रवै ससि रीस दसं मदु आज ॥
बहै जल भेदि सु कुंकम बार। तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
छं० ॥ १५९ ॥
जु राहय चास पियै विष सोम। द्रवै मुष चंदह मत्तह भोम ॥
करैं बर मज्जन स्ज्जन नारि। धरैं धन धारत संत सँवारि ॥
छं० ॥ १६० ॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच ॥ कियं सुरंग मज्जनं। नराच छंद रज्जनं ॥
सुगंध केस पासयौ। बिहथ्थ हथ्थ भासयौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उपम्म जीस साधयौ। बिरंचि लेष बाधयौ ॥
जु बुद्धि रासि भासयौ। सजीवता प्रगासयौ ॥ छं० ॥ १६२ ॥

(१) ए. कृ. को.-उलीचन।

[1]जु केस मुत्ति संजुरे । ससी सराह दो लरे ॥
मनोस बाल साच ज्यौं । कि कन्ह कालि नाच ज्यौं ॥छं०॥१६३॥
धरी नबैन कघ्थयौ । जु कन्ह कालि मथ्थयौ ॥
तिलक्क भाल भासयौ । भलक्क काल साचयौ ॥ छं० ॥ १६४ ॥
विधार गंग पावयौ । जु तिथ्थराज आसयौ ॥
घसंत सोमता वरं । कलीन भद्र सावरं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सुभाव वान [2]बाढ़यौ । सुराह कंपि [3]ठाठयौ ॥
सु पट्टि बाल ठानयौ । सु राह रूप जानयौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
उपम्म नैन ऐनसी । मनौं कि मीन मैनसी ॥
कवी [4]निसंक जानयौ । उपम्म चित्त मानयौ ॥ छं० ॥ १६७ ॥
भवन्न जीव छंडयौ । ससीम रूप मंडयौ ॥
उपंम बिंब उग्गनं । कमल्ल जासु सुम्मनं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
हलंत मुत्ति सोभई । उपम्म अत्ति लोभई ॥
अग्रत्त तार विच्छुरी । दु चंद अग्ग निक्करी ॥ छं० ॥ १६९ ॥
सु तारि हंस सामरं । अनेक भेस तामरं ॥
विभास रूप आमरं । सु चंद चित्त साहरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
रतन्न बिंब जानयं । सु चंदबी प्रमानयं ॥
त्रिवल्लि ग्रीव सोभई । जु पोति पुंज [5]लोभई ॥ छं० ॥ १७१ ॥
ससीरु राह छंडि कैं । असंन बैठि मंडि कैं ॥
डरं हरा विसाल यौ । कि ईस द्वीप मालयौ ॥ छं० ॥ १७२ ॥
उरं चिअंग जित्तयौ । जु सुक्क बग्ग पंतयौ ॥
कि काम बीर भंजयौ । दहत्ति ग्रेह रंजयौ ॥ छं० ॥ १७३ ॥
उपंम ईस [6]कुब्बयौ । अनंग नीति रच्चयौ ॥
रोमंग तुच्छ राजयं । उंपम्म ता विराजयं ॥ छं० ॥ १७४ ॥

(१) मो.-सु ।　　(२) मो.-बाढ़कौ ।　　(३) मो..ठाढ़कौ ।
(४) ए. कृ. को.-संक ।
(५) मो.-लुम्भई ।　　(६) ए.-चक्कयौ ।

उरज्ज पच काम को । लिषै जोवंत वाम कौ ॥
कटी अलप्पता ग्रही । मनों कि रिद्धि रंकई ॥ छं० ॥ १७५ ॥
कि सोभ है न्त्रपं रही । तुला कि दंडिका कही ॥
रुलंत छुद्र घंटिका । सदंत सद्द दंडिका ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जु जेहरी जराइ की । घुगंत नद्द पाइ की ॥
नितंब अद्ध तुंबियं । प्रबाल रंग [1]षुब्बियं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
कि काम रथ्थ चक्कए । चलंत एड़ि वक्कए ॥
उलट्टि रंभ जंघनं । करी सु नास पिंडनं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
उपंम रंग राजही । जलज्ज भांति साजही ॥
बसन्न सेत बन्नयं । उपम्म कव्वि भन्नयं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
मनों कि दीय अंभयं । सुभंत भध्य रंभयं ॥
दसन्न जोति दामिनी । मनों अनंग भामिनी ॥ छं० ॥ १८० ॥
सुगत्ति हंस लौनयं । सिंगार सोभ कौनयं ॥
झंकार झंजनं झनं । मनों कि सोर भद्दनं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
सु कासमीर रंगयं । जु एड़ि जावकं लयं ॥
मनों कि हंस सावकं । चलै बिद्रुम्म भावकं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
[2]जरित्त मुद्दका नगं । सु जोति अंगुली लगं ॥
जुवास रास चासयं । मनों हुतास पासयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
[3]दिपंति नष्प बीसयं । रबी ससी सुरीसयं ॥
नव ग्रहीय पुच्चिया । उपम्म कब्बि बंचिया ॥ छं० ॥ १८४ ॥
जु चंद राह षेदि कै । कि हस्त चंद भेदि कै ॥
उभै तिषट्ट भूषनं । सजंत मेटि दूषनं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चलंत वाम कोड़यं । तजंत हंस होड़यं ॥
उमग्गि ग्रिथ्थि देषनं । अलीन मभ्भ पेषनं ॥ छं० ॥ १८६ ॥
सु सैसवं लगंत रुष्पि । मुक्कियं दरस्स दिष्पि ॥
॥ छं० ॥ १८७ ॥

(१) मो.- षुभ्भियं,को.-पुब्बियं । (२) मो.-जरिंत । (३) मो.-दियत्त ।

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन।

हनूफाल ॥ सुर मनौं कौकिल जोइ। अबजंघ रंचन होइ ॥
अंबर कमल्ल पुटन्न। रितु देषि सीत बसन्न ॥ छं० ॥ १८८ ॥
इह संधि रंभ दसन्न। बनि रवनि प्रीत बसन्न ॥
कसि कासमीर सुरंग। झंकार पिंड अभंग ॥ छं० ॥ १८९ ॥
नग जरित मुद्रिक पानि। रवि परी होइ सुजानि ॥
नौ ग्रहिअ पंचित्र हथ्थ। उपम्म चंद सु कथ्थ ॥ छं० ॥ १९० ॥
सोई चंद उप्पम षेदि। कै हँसत हिमकर भेदि ॥
बर एड़ि मंडि सुरंग। जनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० ॥ १९१ ॥
षट दून भूषन सज्जि। सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड़। गति हंस तजहित होड़ ॥ छं० ॥ १९२ ॥
बर चरन लगि चिंपयान। पय परस चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पान सलाइ। बे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
तव लग्गी सैसव रष्षि। मो [2]कंत दरसन दष्षि ॥ छं० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन।

कुंडलिया ॥ बर कुंकुम सब हथ्थ रगि। बहु सथ्थ [3]न्रप बर सथ्थ ॥
सो ओपम बर राज लहि। कवि बरनन लहि कथ्थ ॥
कवि बरनन लहि कथ्थ। फिरिय गुर राजहि कथ्थें ॥
मन सस्तिर काम कौ। प्रात उग्गत रवि सथ्थै ॥
[4]सुभ्रत रवि ससि रूप। एक असु औव काम तर ॥
पंचानन तिन होइ। पंच प्रथिराज देव बर ॥ छं० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीरज का विवाह मंडप में प्रवेश।

दूहा ॥ वंदन वर आयौ न्रपति। तोरन संभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै। कामिन पूजत मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥

(१) ए. कृ. को.-यान। (२) मो.-कहून। (३) मो.-उप।
(४) मो.-कै सुभूत ससि रूप।

पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन।

कुंडलिया ॥ नग मग जटित सुमेर सिर। तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर। संग सपत्तौ लोभ ॥
संग सपत्तौ लोभ। जुड़ तट वर अन रुक्की ॥
रहै नृपति दै आन। नैन चितवत फिर मुक्की ॥
पंचन पष चिमनिय। ति नर तरुनी मन [1]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह। ह्वर भंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० ॥ १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना।

चौपाई ॥ सत संग किन्न अवंत अली। नंषत बर अचित [2]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रुप रस [3]सानि। पंषि मनौ नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १९८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुलित होना।

कवित्त ॥ बंदि सु बर चहुआन। मंझ ग्रह काज सु लिन्नौ ॥
बाल रूप अवलोकि। महुर महुरं रस पिन्नै ॥
द्रिग सौं द्रिग संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन ॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यौं पंद चकोरन ॥
नव भमर पिठ्ठ वर कमल में। कै मकरंद भ्रुलावहीं ॥
आनंद उगति मंगल अभिष। सो कवि बरनन गावहीं ॥छं०॥१९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना।

दूहा ॥ बर अंचल सोमेस चित। बंधि बीर बर नारि ॥
देवक्रम दुज क्रम कही। सो बर बीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

संहावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भग्गा मग्गा।
(२) ए. कृ. को.-पिय।
(३) मो.-मानी।

कवित्त ॥ बैनि नाग लुट्टयौ । बदन ससि राका लुथ्यौ ॥
नैन पदम पंषुरिय । कुंभ कुच भारिंग छुथ्यौ ॥
मद्धि भाग प्रथिराज । हंस गति [1]सारंग मत्ती ॥
जंघ रंभ बिपरीत । कंठ कोकिल रस मत्ती ॥
ग्रहि लियौ साज चंपक बरन । दसन बीज दुज नास बर ॥
सेना समग्र एकत करिय । काम राज [2]जीतन सुधर ॥ छं०॥२०१॥

दूहा ॥ कवि लघु लघु बत्ती कही । उकति चंद नन छेव ॥
मनों जनक बंदन कवन । जानु कि बंदै देव ॥ छं० ॥ २०२॥

इसी समय* दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना ।

कवित्त ॥ चढ्ढिग सब सामंत । चूक सब सेन सु दिष्षिय ॥
पट दस बर सामंत । मरन केवल मन लिष्षिय ॥
पंत निसुरत्ति समूह । जूह दैवान सु धाइय ॥
मार मार [3]उचरंत । मार कहि समर सु साइय ॥
इत उतह सब्ब सामंत रजि । तिन अरि तन तिन बर करिय ॥
मानव न नाग दिन आइ जुध । सुबर जुद्ध रत्ती करिय ॥
छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ सूर सम्हें परे, सेन भग्गे लरे । काफरं बिड्डुरे, लोह मची झरे॥
छं० ॥ २०४ ॥

पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं । कड्डियं पंजरं, नंष्षि लोहं करं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

सूर बथ्थं परं, मोह मोहं परं । कूक बज्जी परं, लोह वडप्फरं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

(१) ए. कृ. को. सारद ।　　　　(२) मो.-जीपन ।
* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छ० २२० में खुलती है ।
(३) ए. कृ. को.-उचंत, उच्चेत ।

अग्ग उड्डी झरं, बीर बाजं ढरं। श्रोन रत्तं [1]धरं, श्रंत श्रालुभ्झरं ॥ छं० ॥ २०७ ॥

छूर जा उच्चरं, रारि उग्गं जरं। लज्ज पञ्च परं, लोह लोहं करं ॥ छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैनि श्रड्डी बरं। बाज कुट्टी झरं, षान झारा झरं ॥ छं० ॥ २०९ ॥

ढाह मीरं धरं, मझझ रोसं ररं। सानि सामं नरं, घाइ घुम्मैं घरं ॥ छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ कन्ह बंध मझझैं रह्यौ। रहे सु जैत कुश्रार ॥
है सुकिव सामंत गौ। उप्पर मेर पहार ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ प्रात षान सुरतान। सेन [2]बंधी श्रहसारी ॥
बर सोभै कविचंद। चंद श्रष्टमि श्राकारी ॥
श्रद्ध चंद्र महमूंदि। श्रद्ध षुरसान षान करि ॥
मध्य भाग रुस्तम्म। सेन षुरसान जित्ति [3]वरि ॥
दल धरकि भरकि सिप्पर लई। श्ररुन दीय उद्दिम सुभर ॥
चिचंग राइ रावर समर। चढि मंग्यौ [4]बंधव श्रमर ॥ छं० ॥ २१२ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

चोटक ॥ सारंग चढ्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं ॥
छननंकहि घंटन घंटन की। तन नंकहि भेरि भयंटन की ॥ छं० ॥ २१३ ॥

घननंकहि घुग्घर पष्य रनं। ठननंकहि श्राइ प्रसद्द घनं ॥
[5]बर चिक्किय चक्कि मिले पलटे। दिषि घुग्घुर रैनिय श्रस्स घटै ॥ छं० ॥ २१४ ॥

(१) मो.-भरं। (२) मो.-बन्धे।
(३) ए. कृ. को. बर। (४) ए. कृ. को. बंध्यौ। (५) ए. कृ. को.-"वर चाक्किय"।

तमके तम तेज पहार उठे। बहुरे किधु पावस अभ्भ बुठे ॥
कविचंद सु अंसुय [1]साव धरे। चय [2]नैत्त जु गंग समीर षरे ॥
छं० ॥ २१५ ॥
दोउ दीन अनंदिय तेग छुटी। सु बनै चहुआनय सार टटी ॥
छं० ॥ २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा ॥ उट्ठि ढाल चहुआन बर। बढ़ि अवाज परवान ॥
सुनि बरत्ती सों रत्त तिन। सत छुट्टे बर थान ॥ छं० ॥ २१७ ॥

थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ धुअ मुष रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि ॥
घरी अद्ध बजि लोह। सबै चतुरंग सेन भजि ॥
जुद्ध कंध कुल नास। षान निसुरत्ति अहुट्टे ॥
चामर छच रषत्त। तषत है वै बर लुट्टे ॥
प्रथिराज बीर रावर समर। मिलि [3]नषिच पति ग्रहन गिरि ॥
धर लज्जि लज्जि आहुट्ठ पति। तीन वार अट्ठंग गिरि ॥छं०॥२१८॥

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असवान हाथ लगना और पीरोजे खां का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरंग। चारु चतुरंग समोरी ॥
[4]एक लष्ष प्रम्मान। ढाल गोरी ढुंढोरी ॥
षां पिरोज परि षेत। षेत को का उप्पारी ॥
समर सिंघ रावर। नरिंद भोरी करि डारी ॥
बज्जे निसान जयपत्त के। बिन सुरतानै लुट्टि [5]दल ॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छच रषत्त तल ॥ छं० ॥ २१९ ॥

---

(१) मो. साच। (२) मो.-नेत्र। (३) ए. कृ. को.-नछित्र।
(४) मो.-"एक लष्ष पम्मर प्रमांन" ए. कृ. को.-एक लष्ष पष्षर प्रमांन।
(५) मो.-"बिन सुरतान सु लुट्टि छल"।

पृथ्वीराज का सब सामंन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुगृहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सब्ब सामंतन मन्ने ॥
उच्च भाव आदर सु। दीन उर चंपि सु लिन्ने ॥
नैन चैन नन बैन। हीन सुपन्न कढ़ि दोऊ ॥
बर समान तुम राज। तेग राजन विधि कोऊ ॥
रष्षयौ गाम रतिवाह दै। तुम कंधें ढिल्ली नयर ॥
चित्रंग राव रावर समर। [1]पाघ सीस बंधी अमर ॥छं०॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूहा ॥ [2]तेजसिंह सुत समरसी। तिंह सुत कुंभ नरेस ॥
संभरि संभरि वार दै। दौहित्तौ सोमेस ॥ छं० ॥ २२१ ॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त ॥ तब चित्रंग [3]नरेस। पिझवि नंष्यौ बर पट्टौ ॥
तुम ढूंढा कुल ढुंढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टौ ॥
हथ्थ नीच करतार। हथ्थ उप्पर गजत्त गुर ॥
हम आहुट्ट मझामि। स्वामि कहिजै सु [4]उंच बर ॥
कालंक राइ कप्पन [5]विरुद। कुलह कलंक न लग्गयौ ॥
दग्यौ न हाथ [6]चित्तौर पति। हम जगत्त सब दग्गयौ ॥छं०॥२२२॥

---

(१) कृ. पाय।

(२) छंन्द २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में समान है जिसका अर्थ होता है कि "समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन जो कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम धरिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ में भेद पड़ता है।

(३) मो.-नरिंद। (४) मो.-चंद। (५) ए. कृ. को.- बिरद्ध।

(६) कृ.-चीतौर।

समर सिंह का चित्तौर जाना।

दूहा ॥ ग्रेह गयौ चित्रंग पति। गौ ढिल्लिय न्रप छेह ॥
मास बीय बित्ते न्रपति। मतौ मंडि न्रप एह ॥ छं० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना।

विमल विलोकन कोक रस। सोक हरन सुष सत्त ॥
समुष हंस प्रभु नीलप्रभ। विभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन।

भुजंगी ॥ द्रिगं मंच मंचं सुमंचं प्रमानं। वियं केलि करनी विधानं सुजानं॥
निजं नेह नीलं सु कीलं कलानं। मुषं मूल विष्पं सु देवं सधानं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

मयं मोह मंडं सु बंदीन दानं। हयं हेम हट्टं पताका सु थानं ॥
[1]सु ग्रंथं च सोभा स सोभा स मंचं। [2]छयं छंद जोतीय संसाइ तंचं॥
छं० ॥ २२६ ॥

पियं पेम तंचं सु कंतं सु थानं। सुराया विहंगं सु पुची प्रमानं ॥
जियं ग्रेह सज्या प्रथमं अलीनं। मनों मत्त मातंग [3]बंध्यौ कलीनं॥
छं० ॥ २२७ ॥

बचं अंकुसं हेट हेटं पेलावै। दुरै देषि जालंतरे फेरि नावै ॥
छुट्यौ सैसवं लज्ज तें प्रेम आसं। फिरे जानि बाला तनं प्रेम आसं॥
छं० ॥ २२८ ॥

सया हंस हंसावती नील थाहं। कवी केलि कंठे यकौ सच्च स्याहं॥
उरं अंत घोरं विवाहं विरोरं। कला केलि बढ्ढी विहानं सजोरं ॥
छं० ॥ २२९ ॥

दनौ देव ज्यौं आनि सहान सेजं। सदा स्वेद षेदं हुअौ प्रात हेजं॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३० ॥

---

(१) क. को.-सुषं। (२) मो.-" छय दुत्तिय छंन्द छम्माय तंत्रं।
(३) मो.-बन्धे।

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना।

*कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन। रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दहिय [1]वदन सहि रहिय। सरस रस सौर सु लुट्टिय ॥
महिय लहिय नहिं नहिय। [2]हइय हय हयइ यथा [3]हह ॥
सहिय सेज कह कहिय। चंपि चिंचनिय सन्न यह ॥
कामंध अंध मुह्रह वृषभ। भ्रमन भ्रमावह तिलकं सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह। अगह मुगद्धन मन हसन ॥छं०॥२३१॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना।

दूहा ॥ मन हिय वृत्तन मुगधनियं। रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर [4]म्रग रथिय। निसि न्रिम्मल दिय छेह ॥छं०॥२३२॥

शनै शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना।

छंद कमंध ॥ न्रिम्मली नेह नासा। दिष्ट एन लंग्गी सु त्रासा ॥
छेहंग कामी रसा। संचान भग्गी चसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची। दासी प्रीति संवची ॥
† पुस्तका पढ़ि विस्तरी। कथा गाथा प्रेम बिस्तरी ॥छं०॥२३४॥
दंत कंडक निस्तरी। हास विलास सुस्तरी ॥ छं० ॥ २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चद्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं।
सस [5]सज बंधू चक्रवाकोपि कीरा ॥

---

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है। (१) को.-सवद।
(२) ए.- हरय। (३) को.हय। (४) मो.-मग्गथिय। (५) मो.-समं ससं।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है।

तिमिरगजम्रगेद्रं चन्द्रकातंप्रमाथी।
विकसि अरुन प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० ॥ २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं।
कुमुद बन विकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु माननीमानमर्द्दी।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० ॥ २३७ ॥

दिवस के सभय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये।

मुरिल ॥ बंछय चंद चकोरत राजन। [1]हंसनि हंस उदै भयौ साजन ॥
बिहु निसि नेह निसाकर बढ्ढिय। कनक ज्रेम कसि कर [2]आहुट्टिय॥
छं० ॥ २३८ ॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फंदा। विसनी पत्त वलाकारे हथ्थं ॥
मरकति मनि भाजन्ने। परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना।

झिल्ली झिंगुर खरी। गायन पुचीय ललित लुभ्भरियं ॥
पहुकिय पंष [3]सु हासं। झलकिय सीताइ मदं मंदाइं ॥छं०॥२४०॥
किय मंडि स पुक्करियं। मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार चौर साही। पुक्कारे जाहु रे जाह ॥ छं० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना।

पंपट करि करतारं। हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बड्डय अंकुरियं। कुक्कडयं [4]कंठ कल्लायं ॥ छं० ॥ २४२ ॥
[5]अचलीय नेह ससी हर। [6]रसनह रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय संदेसं। गावै एकंतं चित्त सल्लाइं ॥ छं० ॥ २४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-हसति, हंसति। (२) ए.-आहुठ्ठिय। (३) ए. कृ. को.-सहासं।
(४) मो.-कंठक। (५) ए. कृ. को.-"अबलिय नेह से सहिए"।
(६) ए. कृ. को.-रसरह।

हे मौनं करि कोकिलयं। जलधर सम एह कंठ [1]उंचत॥
बिकसित कर जल बंदे। विकसित रमे कोक सावासी॥ छं० ॥२४४॥
संग्राम गए सूरौ [2]संपगे। होइ चंद्रोदए॥
विविधा काम तीयं। अवसर रत्त [3]काम लब्भाइं॥ छं०॥ २४५॥
गाहा नक्किय तत्ती। सदानं नूपुरं उरवा॥
[4]जिह अंकुर पव्वितं। भूतं जुथ्यांइ मंग भंगुरयं॥ छं०॥ २४६॥
जोई छविना वेनं। रचया सि महिला न रूप महु कमले॥
तां नंचिय सु बियोगे। निमहं मुत्तंच जुग्ग जुग्गरए॥छं०॥२४७॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे।

पीय आरंभत चिययं। चिय आरंभ कंतं [5]चित्तायं॥
सो तिय पिय पिय पत्तौ। मा पिमं [6]विद्दमं धामं॥ छं०॥ २४८॥
अजा [7]सत्र जो होजा। कंठायं पयो हरं फलयं॥
दीहंते सय लष्यं। हसनं रस नाय स बकियं होइं॥ छं०॥२४९॥
*जोती अहर सहाश्रौ। उचसिया कील कंतायं॥
सो तिय अग्ग सुहाई। दिस असनी रसं नायं॥ छं०॥ २५०॥
कवित्त॥ रयनि पंच संकुलित। पंच लज्जित दुरि लोइन॥
भिरत उभय भिरि षग्ग। मग्ग लग्गिय जुर जोइन॥
[8]मिलत चतुर इक रौय। अतुर ग्रहं ग्रहं [9]दद्दुर बल॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त। नष अष [10]बष्य बल॥
आरति सोइ दइता बिछुरि। पार [11]समुद्र न नेह लहि॥
इय प्रात पतिव्रत प्रथम पहु। नवति चित्त आचंभ लहि॥छं०॥२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-उचंती। (२) ए.-संष। (३) ए. कृ. को.-कान।
(४) ए. कृ. को.-"निद अंकुरं ए वित्त"। (५) ए. कृ. को.-वितायं।
(६) मो.-बंदयं। (७) ए. कृ. को.-सानंजं।
* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है।
(८) मो.-माचित। (९) ए. कृ. को.-दुदुर।
(१०) मो.-चष्ष। (११) मो.-समुद्रिन।

कवित्त ॥ हंसराइ [1]हंसनिय । पानि ग्रहंनी ग्रह हल्लिय ॥
मालव द्रुग्ग देवास । [2]वास मुद्धत नव वल्लिय ॥
हय गय धुर धर ध्रम्म । क्रम्म कित्ती अंति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ । प्रीति षीची चौहानह ॥
चित्त्ंग राइ रावर रमिय । [3]देव राज जद्दव वहिय ॥
वित्तिय वसंत रिति अभ्भरिय । अचल एक कित्ती रहिय छं०॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि । चंद छंद [4]कविचंद ॥
समर अठारह बरष दस । दिवस चिपंच रषिंद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

(१) ए..संसानिय । (२) मो.-वास मुद्दंत नवाल्लिय ।
(३) ए. क्रु. को.-बेदराज । (४) मो.-कवि छंद ।

अरी [1]षान दिष्षौ बरं आसमानं। [2]करी कूंच सेना प्रकासंत भानं॥
छं० ॥ ४॥

दलं लष्य तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं कित्ति सूरं॥
अनंहद्द नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत बैताल मत्ते मदूरं॥
छं० ॥ ५॥

हलाहम्म झंकार हुंकार भारी। तुटै तेक तानं झरं ढुमि धारी॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। घनं निंदरे चोष नंचै न छाया॥
छं० ॥ ६॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजी रसालं सदोलं॥
रचै रंभ रंभा [3]विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं॥
छं० ॥ ७॥

मनौं साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]दंगे॥
छं० ॥ ८॥

असं बेस कंपी ढुरी चौर मज्जी। चढ़े काम फजरं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध [5]व्रत्त पारं॥
छं० ॥ ९॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल वैताल सिंदू सबैनं॥
बनै अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छंत रैनं॥
छं० ॥ १०॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रुपं॥
अनी कोर आकार आक्रत्ति नूपं। बढ़ी भाग पथ्थी पथो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११॥

(१) ए. कृ. को.-पान। (२) मों.-करी कूच सेनाइ सासंत भानं।
(३) ए. कृ. को.-त्रिमानं त्रिमानं। (४) मो.-हंगे।
(५) मो.-आत।

कवित्त ॥ हंसराइ [1]हंसनिय । पानि ग्रहनी ग्रह हल्लिय ॥
मालव द्रुग्ग देवास । [2]वास मुद्दत नव वल्लिय ॥
हय गय धुर धर ध्रम्म । क्रम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ । प्रीति षीची चौहानह ॥
चिचंग राइ रावर रमिय । [3]देव राज जद्दव वहिय ॥
वित्तिय वसंत रिति अभ्भरिय । अचल एक कित्ती रहिय छं०॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि । चंद छंद [4]कविचंद ॥
समर अठारह बरष दस । दिवस त्रिपंच रविंद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥
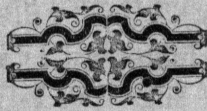
(१) ए..संसनिय ।　　(२) मो.-वास मुद्दत नवाल्लिय ।
(३) ए. कृ. को.-वेदराज ।　　(४) मो.-कवि छंद ।

अरी [1]षान दिष्षौ बरं आसमानं। [2]करौ कूंच सेना प्रकासंत भानं॥
छं० ॥ ४ ॥

दलं लष्य तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं कित्ति सूरं॥
अनंहद्द नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत बैताल मत्ते मदूरं॥
छं० ॥ ५ ॥

हलाहल्ल झंकार हुंकार भारी। तुटै तेक तानं झरं ढुमि धारी॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। घनं निंदरे चोर नंचै न छाया॥
छं० ॥ ६ ॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजी रसालं सदोलं॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं॥
छं० ॥ ७ ॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]दंगे॥
छं० ॥ ८ ॥

असं बेस कंपी ढुरी चौर मज्जी। चढ़े काम फजरं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध [5]व्रत्त पारं॥
छं० ॥ ९ ॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल वैताल सिंदू सबैनं॥
बनै अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छँत रैनं॥
छं० ॥ १० ॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रूपं॥
अनी कोर आकार आकत्ति नूपं। बढ़ी भाग पथ्थी पथो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११ ॥

(१) ए. कृ. को.-पान। (२) मों.-करौ कूच सेनाइ सासंत भानं।
(३) ए. कृ. को.-विमानं विमानं। (४) मो.-हंगे।
(५) मो.-आत।

महो मंडि माया रहै लोपि मालं। पिले [१]पग्ग अग्गं बलं बोलि तालं॥
नवं नद्द नीसान [२]भेरी भयानं। मनों मेघ गज्जे [३]कयानं पयानं॥
छं० ॥ १२॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा॥ [४]तब ततार षुरसान षां। सुनौ साहि साहाब॥
अरि अभंग दल सक्क रस। अमित तेज बल आब॥ छं०॥ १३॥
अरुन बरुंन उद्दित अरुन। बढ़ि प्राची रुचि [५]रूप॥
मेच्छ साँमि चढ़ि सेत अस। रन दिल्ली सम भूप॥ छं०॥ १४॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व को बढ़ कर पड़ाव डालना।

कवित्त॥ अरुन कोर बर अरुन। बंदि साहाब साहि चढ़ि॥
दिसि प्राची दष्षिन [६]विपथ्थ। पच्छिम उत्तर बढ़ि॥
सेस भाग भै भाग। भोमि संकुचि कुकंपि निल॥
गमन सेन उड़ि रेन। गैंन [७]रवि षत्त धुंध इल॥
दस कोस थान दल उत्तरिग। घन अवाज घर रिपु [८]परिग॥
गत मेच्छ मंझि मंडल सुमति। गति सु जंग अग्गर धरिग॥छं०॥१५॥

दूहा॥ रत्तं निसान डग मग्ग अरुन। जिम दीपक्क बसि बात॥
सुनिव चंप अति साह मन। तन विकंप अकुलात॥ छं०॥ १६॥

अरिल्ल॥ मिलि मेच्छ मंडल भर भीरं। अतुलित पान षान संधीरं॥
उठत बयन अप अप्प समीरं। सहि [९]बढ्ढौ थिर कर कंठीरं॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

(१) मो.-पग्ग। (२) ए. कृ. को.-भेभी। (३) मो.-पयानं कयानं।
(४) ए. कृ. को.-तवि। (५) ए. कृ. को.-रूपि। (६) मो.-विथ।
(७) मो.-रचि। (८) मो.-परिय। (९) ए. कृ. को.-थट्टौ थट्टौ।

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं । मंडे पत्तीय वीर पचायं ॥
अप्पित पान प्रमानं । कथ्थौं गाथाय सूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोल्लि दूत चव निकट लिय । दिय सु पत्त तिन हथ्थ ॥
कहौ जाइ ध्रम्मान सों । सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना ।

गाथा ॥ निज के वीसा रुढं । वर साहाब ढिल्लीयं ग्रासं ॥
बरति मंच मष किन्नं । गज्जीय मद्द भद्द नीसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव । करि सलाम बर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन । बलि आतुर बर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना ।

स्याम [2]पष्ष पूरन क्रमिग । पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर ध्रम्मान कर । बर [3]त्रिम्मै रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धम्मीयन से मिलना ।

गाथा ॥ दिय पत्ती ध्रम्मानं । पानं गहि पाइ नाइ बर मथ्थं ॥
भर चौहान समथ्थं । सज्जौ सम साहि कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धम्मीयन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना ।

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि कर । हायथ [4]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुब्भर सभर । आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० । ४१ ॥

धम्मीयन का दरवार में जा कर यह पत्री कैमास को देना ।

बचनिका ॥ पत्ती ध्रम्मन बाचि कैं देहु । बहुरि दरबार गएहु ॥
कैमास कों तसलीम कीनी । पत्ती सु हाथ दीनी ॥ छं० ॥ ४२ ॥

---

(१) ए. कृ. बुल्लवि । (२) मो.-साह । (३) मो.-पथ्थ ।
(४) ए. कृ. को.-मंगै । (५) ए. को. हीय ।

महो मंडि माया रहै लोपि मालं। षिले [१]षग्ग अग्गं बलं बोलि ताल्लं॥
नवं नद्द नीसान [२]भेरी भयानं। मनों मेघ गज्जे [३]कयानं पयानं॥
छं० ॥ १२॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा ॥ [४]तब ततार षुरसान षां। सुनौ साह साहाब॥
अरि अभंग दल सक्क रस। अमित तेज बल आब॥ छं० ॥ १३॥
अरुन बरुंन उद्दित अरुन। बढ़ि प्राची रुचि [५]रूप॥
मेच्छ सामि चढ़ि सेत अस। रन दिल्ली ग्रम भूप॥ छं० ॥ १४॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व को बढ़ कर पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ अरुन कोर बर अरुन। बंदि साहाब साहि चढ़ि॥
दिसि प्राची दष्षिन [६]विपथ्थ। पच्छिम उत्तर बढ़ि॥
सेस भाग भै भाग। भोमि संकुचि कुकंपि निल॥
गमन सेन उड़ि रेन। गेंन [७]रवि षत्त धुंध इल॥
दस कोस थानं दलं उत्तरिग। घन अवाज घर रिपु [८]परिग॥
गंत मेच्छ मंडि मंडल सुमति। गति सु जंग अग्गर धरिग॥छं०॥१५॥

दूहा ॥ रत निसान डग मग अरुन। जिम दीपक बसि बात॥
सुनिव चंप अति साह मन। तन विकंप अकुलात॥ छं० ॥ १६॥

अरिल्ल ॥ मिलि मेच्छ मंडल भर भीरं। [९]अतुलित पान षान संधीरं॥
उठत बयन अप अप्प समीरं। साहि [१०]बढ़ौ थिर कर कंठीरं॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

(१) मो.-पग्ग। (२) ए. कृ. को.-भेभी। (३) मो.-पयानं कयानं।
(४) ए. कृ. को.-तवि। (५) ए. कृ. को.-रूपि। (६) मो.-विथ।
(७) मो.-रचि। (८) मो.-परिय। (९) ए. कृ. को.-थटौ थट्टौ।

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं। मंडे पचीय बीर पचायं ॥
अप्पित पान प्रमानं। कथ्थी गाथाय सूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय। दिय सु पच तिन हथ्थ ॥
कहौ जाइ अम्मान सों। सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना।

गाथा ॥ निज के वीसा रुढं। वर साहाब ढिल्लीय ग्रासं ॥
बरति मंच मष किन्नं। गज्जीय मद्द भद्द नौसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव। करि सलाम बर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन। बलि आतुर बर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना।

स्याम [2]पष्य पूरन क्रमिग। पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर अम्मान कर। बर [3]ग्रिम्मै रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धम्मायन से मिलना।

गाथा ॥ दिय पची अम्मानं। पानं गहि पाई नाइ बर मथ्थं ॥
भर चौहान समथ्थं। सज्जौ सम साह कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धम्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना।

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि कर। हायथ [5]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुब्भर सभर। आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० । ४१ ॥

धम्मायन का दरवार में जा कर यह पत्री कैमास को देना।

बचनिका ॥ पची अम्मन बाचि कैं देहु। बहुरि दरवार गएहु ॥
कैमास कों तसलीम कीनी। पची सु हाथ दीनी ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) ए. कृ. बुल्लवि। (२) मो.-साह। (३) मो.-पथ्य।
(४) ए. कृ. को.-मंगै। (५) ए. को. हीयं।

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख।

चोपाई ॥ हम तुम घरतें सौगंध कीनी। नाते भ्रम्म दुह्र हैं चीन्ही ॥
दानव देव आदि भी लग्गे। तातें बैर पुरातन [1]जग्गे ॥ छं० ॥४३॥
ज्यों ज्यों हम तुम बजिहैं [2]धार। त्यौं त्यौं सुकवि गाइहैं सार ॥
अमर नाम साहिब का सांचा। पानी पिंड षेह का कांचा ॥छं०॥४४॥
हम तुम में वंध्या अहंकार। मरदां भ्रम्म पुरातन धार ॥
मरदा अल्लि भारथ्था वेतौ। मरद मरै तब निपजै षेतौ ॥ छं० ॥४५॥

दूहा ॥ मरदां षेती षग मरन। [3]अथ्थि समप्पन हथ्थ ॥
सो सच्चा कच्चा अवर। कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कथा रही पैगंबरा। अरु भारथ्थं पुरान ॥
तातें हठ हजरत्ति है। सुनौं राज चहुआन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

धर्म्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना।

दिय पत्री इह कहि सु कर। करि सलाम तिय बार ॥
साहिब तुम सन लरन कौ। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना।

सुन्नि मंची न्रप अष्पि सम। बंचि पत्र तिन्न बार ॥
कंच कूंच षंधार पति। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना।

सुनि पत्री चहुआन ने। सम सामंतन राज ॥
बात परठ्ठिय सब भरन। अप्प अप्प [4]भरसाज ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनौ सामंत [5]सूर भर ॥
गज्जनेस चतुरथ्थ। विरथ आयौ सु अप्प पर ॥
साज बाज मय मत्त। षग्ग बर भर उब्भारिय ॥

(१) ए. कृ. को.- लग्गो। (२) ए. को.-धारैं। (३) ए.-हथ्थि।
(४) मो.-बल। (५) ए. कृ. को.-सुर।

उतरि वेग नदि सिंधु। सुनिय धुनि अर उत्तारिय॥
सज्जौ समथ्थ सामंत सब। संमर चावर डंब रन॥
सुरतान खान खुरसानपति। दल बद्दल पावस परन॥छं०॥५१॥

सामंतों का उत्तर देना।

तमकि राज प्रथिराज। कहै समंत सूर भर॥
चाहुआन समरथ्थ। पथ्थ भारथ्थ चारु चर॥
सिंधु साह गज गाह। षग्ग षंडौ पल पित्तह॥
कर अंजुलि रिषि [1]अस्ति। चंद अचवन दल कित्तह॥
हर हार सार संमुष समर। अमर मोह जग्यौ अमर॥
ज्यों मान व्योम आरुढ़ [2]धरि। बनी चमू चौसर चमर॥छं०॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना।

अरिल्ल॥ चढ्यौ राज प्रथिराज सु राजन। [3]पाव लष्य दल बल गज बाजन॥
चामर छत्र रषत्त निसानं। मनुं घनघोर दिसान दिसानं॥
छं०॥५३॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन।

चोटक॥ चढ़ि राज महा भर सैंन भरं। उडि षेह षुरं रुकि सूर करं॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं। किल [4]कौतिग भूत बेताल वरं॥
छं०॥५४॥
मुष छंद सु चंद बरं पठियं। [5]मुष जुग्गिनि अंग वियौ गहियं॥
सुर सद्द जयं जयरं [6]कथयं। चल चंचल सूर चढ़े कसियं॥
छं०॥५५॥
तल ताल करालति कूक करं। .... ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं। तिन अष्यिय सेन निकट्ट कलं॥छं०॥५६॥

---

(१) ए० कृ० को०-लँगस्ति, अगस्त। (२) ए. कृ. को.-ढरि।
(३) मो.-तीन फौज रच्चे गज बाजन। (४) ए. कृ. को.-सुख।
(५) ए.-पथयं। (६) ए. कृ. को.-कौतिक।

पृथ्वीराज का पड़ाव डालना।

दूहा ॥ सुनि अवाज सुरतान दल। हरषि राज प्रथिराज ॥
कोस पंच दुअ संवचिग। हिंदुअ मेच्छ अवाज ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना।

उदय भान प्राची अरुन। चव्यौ राज सजि सेन ॥
उर पातर कातर [१]इसे। मेच्छ पौर फर सेन ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ अच्छरि कच्छिय गैनं। चैनं चवसठ्ठ गैन गोमायं ॥
हर हरषे हारायं। जुद्धं सज्जाइ दो दसा दीनं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

दूहा ॥ मिलिवि सेन अरुन सु अनी। तनी तनी दुअ [२]दीन ॥
असुर ससुर सज्जे सयन। दोउ बीरां रस भीन ॥ छं० ॥ ६० ॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना।

भोढि साहि भर षान सब। पति पुच्छी इह बत्त ॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल। करहु समर सक मत्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना।

अरिल्ल ॥ प्रगटित भान पयानिति पूरं। बाजिग दुंदभि धुनि सुर क्रूरं ॥
चव्यौ साहि संमर करि सूरं। अरुन बरुन मिलि तथ्य [३]सनूरं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना।

दूहा ॥ ढलकि ढाल बहुरंग वर। [४]गुरुत मत्त गजराज ॥
झलकि नीर वपु दल चढ़िय। मनों पावस गुर राज ॥ छं० ॥ ६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जिसे। (२) ए. कृ. को.-दीम।
(३) ए. कृ. को.-न थूरं। (४) मो.-"गुरतम चढ़ि भजराज"।

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन।

भुजंगी॥ ढलक्की सु ढालं, हलक्के ति [१]हूरं। धमक्के धरा, नाग नीसान[२]पूरं॥
किलक्कै सुभैरं, बजे बाज तूरं। झलक्कैं सुनेजा धरा [३]धूम धूरं॥
छं०॥ ६४॥

बरक्के वितालं, बजै तार तालं। करै कूह कूहं, जगी जोग माल्लं॥
नचै सट्ठि चारं, करै राग सिंधू। वकैं भूत प्रेतं, कठें तार तिंदू॥
छं०॥ ६५॥

मिली सेंन सेनं, टगी लग्गि [४]नैंनं। वढ़ी काल काया, चढ़ी गिद्धि गैनं॥
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं। रची अट्ठ फौजं, विचै साहि सारं॥
छं०॥ ६६॥

मुषं अग्ग मंने, षुरासान अन्नी। भरं चिम्मनं, षान तेयं दिठन्नी॥
दिसं वाम मारुफ, पीरोज सज्जे। दिसा दच्छनं, चिम्मनं जम्मरज्जे॥
छं०॥ ६७॥

अनी च्यारि पिट्ठं, अनी दोइ अग्गं। गुरं गौर तारं, फरी पाइ कग्गं॥
जग्यौ जगं जोरं, हुऔ बीर सोरं। घनंनद्द नौसान, भद्दं सघोरं॥
छं०॥ ६८॥

दूहा॥ भर सहाब सज्जिय अनी। जिवन जोर चतुरंग॥
सुभर प्रफुल्लित वीर मुष। काइर कंपत अंग॥ छं०॥ ६९॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन।

भुजंगी॥ चढ्यौ राज चहुआन कुप्यौ करूरं। बढ़ी बेद साषी चढ़ी जाग रूरं॥
ढलक्की सुढालं सु ढालं धमक्कै। करं छत षग्गं सु पट्टे चमक्के॥
छं०॥ ७०॥

---

(१) ए.-निसानं। (२) ए.-मेरं, कृ.-मूरं।
(३) मो.-"धग धूर पूरं"। (४) मो. गैनं।

घनंआगमं जानि विज्जू दमक्के । घनंघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच [1]सेना मधे [2]मंड्डि राजं । गजं बाजि रोहं हयन्नार साजं॥
छं० ॥ ७१ ॥

मुषं अग्ग कैमास चावंड सूरं । सहस्सं अठं सेन गज बाजि पूरं ॥
[3]भुजा दच्छिनं भीम कन्हं किवारं । सतं तथ्थ सामंत सेनं सवारं ॥
छं० ॥ ७२ ॥

दिगं वाम पंम्मार आबू [4]प्रईसं । चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
[5]रसं रौद्र मंडौ षगं [6]षंडि जीसं । फिरैं वेक ढालं [7]ढुरैं नागरीसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

पछं जाम जाजं दलं सिंघ साजं । सयं पंच पंचास संगी विराजं॥
दहं तीन पंचं [8]तथं पंच सज्जं । इलं लेष नंदं गनं गेन गज्जं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

घमं घम्म नीसान रीसान बज्जं । सबद्दं [9]सु सद्दं सु सिद्दं सु लज्जं॥
चढ़े मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अन्नी । कथी व्यास भारथ्थ सा आज वन्नी ॥
छं० ॥ ७५ ॥

कुरं पंड बंध्यौ बधे आप अग्गे । इसे मेच्छ हिंदू भरं षग्ग लग्गे ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना ।

दूहा ॥ जनुकि पथ्थ भारथ्थ भर । लगि कुर पंड प्रचंड ॥
चाहुआन दल मेच्छ दल । हक्कि हय ग्गय झुंड ॥ छं० ॥ ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल । [10]रन चढ्ढे बर धीर ॥
हक्कि तेज असि बेग बढ़ि । लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) मो.-फौजं । (२) ए. कृ. को.-मधं । (३) ए. कृ. को.-दिसा ।
(४) मो.-अईसं । (५) मो.-"रसं शङ्कर माडि षग षांडे जीसं" ।
(६) ए. कृ. को.-षंड । (७) ए. कृ. को.-ढलै, ढलैं ।
(८) ए. कृ. को.-मयं । (९) ए. कृ. को.-सुसज्जं ।
(१०) ए. कृ. को.-चल्ले चढ़ि ।

युद्ध का दृश्य वर्णन।

दंडमाल ॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि। घाइ घाइ अघाय घर हरि ॥
रुंड मुंडन षंड घर हर। मत्त बहुत सुरत्त भरहरि ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भग्ग काइर जूह भीरन। छंडि जल हरिज्ज धीरन ॥
रुंड चढ्ढिय रच्चि थर हरि। रक्त जुग्गिनि पच पिय भरि ॥छं०॥८०॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि। सुफटि पट्ट सुपट्ट फर हरि ॥
सिद्ध सूरन बीर जुरि जुरि। .... ॥ छं० ॥ ८१ ॥
प्रबल पीलिय पाल सेनिय। विचलि थल दिग परै ऐनिय ॥
गोम गैंन निसान नंगिय। थान थान बिवान संगिय ॥ छं० ॥ ८२ ॥
भुअन भिरि भुअधार धारन। श्रोन तुच्छिय हीर झारन ॥
हिंदु मेच्छ अघाइ घाइन। नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

गाथा ॥ नंचिय नारद मोदं। क्रोधं घन देषि सु भट्टायं ॥
हर हरषिय हारं। पत्तो चंद भानं भा यानं ॥ छं० ॥ ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना।

दूहा ॥ थकि झुझझत संध्या सपत। सपत भान पायान ॥
पहु प्राची बजि पंचजन। लह सूझत गोयान ॥ छं० ॥ छं० ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल होतेही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना।

कुंडलिया ॥ पहुलग्गे चामंड सुभर। अरु चिमन्न चतुरंग ॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि। बहसि बढ़ी सु तुरंग ॥
बहसि बढ्ढि सु तुरंग। पंच साइक भाले भिलि ॥
फुनि गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥
जिम रघुपति प्रतिलकं। बकं कंकन कर अग्गी ॥
तिम गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे जुध लग्गी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) मो.-चतुरंग।

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना।

कबित्त ॥ उदय भान पापान । कोर दिष्षिय दल चढ्ढिय ॥
हय गय [1]नर आररिय। सद्द पर सद्दन बढ्ढिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय। व्योम बिम्मानह चढ्ढिय ॥
दिष्षि सूर सामंत। देव जैजै मुख पढ्ढिय ॥
हथ्थिय सुधारि हयनारि धरि। गजैनारि करनारि बजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय। मनों अम्भ पावस सु रजि ॥
छं० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तीकम अमर। धनुष बान अग्रान ॥
हिंदुअ मीर सुइक्क हुअ। मीरचंद सनमान ॥ छं० ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी ॥ मिले हिंदुं मेंछं अनी एक मेकं। [2]बजे षग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पच [3]सत्ती चवै [4] सिंध नद्दं। अवै श्रोन गंडूष षग्गं उनंगं ॥
छं० ॥ ८९ ॥
उठें रत्त पीतं घमं धूम रंगं। सतं [5] सेत नीलं जलंजात संगं ॥
उठं पच [6]डंडूर सर सोभ सज्जी। मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥
छं० ॥ ९० ॥
बितालं बितालं रजे ताल मेरं। गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ बेरं ॥
जमं जांम जग्यौ जमानं सुजग्गं। तिलं [7]तिभ्भभ्भ अग्गं बढ़े षग्ग षग्गं ॥
छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-अर।
(२) मो.-"वजे षग्ग धारं जेतो झत्ततेकं"।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठी। (४) मो.-सिद्ध।
(५) मो.-सेल। (६) ए.-डेंडूर। (७) ए. कृ. को.-तिल्ल।

जयं अग्गि जग्गी जनू जग्य जूनं। रते अंग अंगं चले संग [1]खूनं॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ बान भानं। परे पाइ सामंत सो चंद जानं॥
छं० ॥ ९२ ॥

जिमं पंड [2]कैरूं परे मभ्भि जुद्धं। सही सच्चु कथ्थौ पगं बद्धि उद्धं।
कवीचंद कथ्थौ कुरष्पेत हेतं। इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं॥
छं० ॥ ९३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ नेत बंधि हिंदू। नरिंदं सामंत मत्तभर॥
मीर भार असरार। सबें ढाहे सु सद्धि सर॥
पथ्थ जेम भारथ्थ। कथ्थ सुभ्भै जिम कथ्थिय॥
सु कविचंद बरदाइ। एम कथ्थिय रन बत्तिय॥
घन घाइ आघाइ सुघाइ घट। तेक तानि नंचिय करस॥
चहुआन राइ सुरतान दल। न्नत्य बीर मंड्यौ सरस॥ छं० ९४॥

दूहा ॥ तेग तार मंडिय समर। नचिय नंच बिन पैर॥
चाहुआन सुरतान रिन। रचे न्नत्य बर बैर॥ छं० ॥ ९५॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना।

भुजंगी ॥ रचे न्नत्य बर बैर [3]हिंदू रु मीरं। म्रदुं मंदलं तज्ज राजंत धीरं॥
घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं। करें न्नत्य भूतं रचें और कोरं॥
छं० ॥ ९६ ॥

करंताल भालं बजें रंग रंगं। भ्रमै गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं
सुरं सुंदरी नंदरी चढ्ढि व्योमं। छबी छब्बि छायं बरं बार सोमं॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं रत्त गुल्लाल फूले सु [4]फागं। पलं पग्ग कूचं समं माल लागं॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं। लगें पग्ग पत्तं सु पेरंत मानं॥छं०॥९८॥

(१) मो.-रूनं। (२) ए. कृ. को.-केरं।
(३) मो.-हिन्दू समीरं। (४) ए. कृ. को.-कागं।

कटै अड्ड सीसं बहै रत्तजानं। रतं पट्ट बंध्यौ मनों रिझ्झि भानं ॥
सुरं सट्ठि नद्दं चवै मुष्ष गानं। फिरैं जुद्ध जोधं बहै मोह बानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

बढ़े मांस प्रासाद भूतं अहूरं। रतं पानि डारं तकै हूर नूरं ॥
रुरै रत्त रूपं कचं कुंच वासं। विधिं छित्ति राजी रसं रंग रासं ॥
छं० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पानं बिना सीस केलं। मनों अग्ग फागं जगे न्रत्य षेलं ॥
षगं घंटि नाना कटे रुंड सेषं। इभं रूढ़ सट्ठी निनें नारि देषं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

बकै मत्त हालाहलं षग्ग षंडे। जिसे राम रन मझ्झ रावन्न मंडे ॥
नवं नारिका बाटिका वीर तुट्टै। घनं घाइ प्रघ्घाइ जुग जोग छुट्टै ॥
छं० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन।

कवित्त ॥ नव बट्टिय नाटिका। षग्ग कढ्ढी असु हक्किय ॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत। अप्प अप्पन चढ़ि कंकिय ॥
रा चावँडराय जैतसी। राइ पज्जून [1]कनक्कह ॥
मीर षान भर पंच। षग्ग वट्टए तननंकह ॥
वपु बेद चन्द बानी विमध्ध। विदुरि षग्ग षल्ल षेत बढ़ि ॥
कैंवल्ल सु कढ्ढि [2]सुरतान दल। लिय रतन्न मथि देव दधि ॥
छं० ॥ १०३ ॥

कुंडलिया ॥ मथि कढ्यौ सुरतान दल। दधि केवल्ल मन बढ्ढि ॥
मीर षान मारूफ दल। बीर विमानन चढ्ढि ॥
वीर विमानन चढ्ढि। दिष्ट बढ्ढी बारह परि ॥
भर चंदेल विरंम। षेत झोरी सुभोंह भर ॥
गय नंगचंद अम्रत झरिग। कुसुम गुच्छ कविचंद पथि ॥
बिम्मान पथ्थ रवि कुंत रथ। षग्ग नेत कढि केल मथि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

(१) ए. कृ. को.-कमक्कह। (२) मो.-षुरसान, षुरसांन।

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मच्यो सुरतानय सेन पयार । लई जस कीरति चंद सुचार ॥
परे रन मज्झ चँदेल सुचाइ । परे बहु षान सुघाइ अघाइ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

पऱ्यौ धर बाहर [1]राइति साल । धरद्धर धग्गन तुट्टिय ताल ॥
बरें कर अच्छर सुच्छर माल । धकद्धक काइर छत्ति विसाल ॥
छं० ॥ १०६ ॥

झुकि झझुकि तुंडन अड्ड कमड्ड । मनों हरि चक्कन केतन बड्ड ॥
पऱ्यौ घन [2]धाव सु वीरमदेव । हयग्गय विड्डिय छच अनेव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बिनों सिर नंचत मौर कमंध । हये हय नाग नरब्भर संध ॥
लयौ धर सीस सुभ्यौ असि साइ । हनैं लगि पंचय पंचय धाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

[3]हर लगि पंचल षिम्मन घाइ । ....
[4]पऱ्यौ पीरोज सु रावन नंद । करें [5]नथ कोतिग हूरन चंद ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चले दल चंचल दो सुरतानं । लगे कर देषि चँदेल परानं ॥
परे मफरद्द सुमंच [6]बिभीर । लगे ग्रहलुट्टि अषी कर कीर ॥
छं० ॥ ११० ॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात । विय छवि छंद बढ़ी हबिपात ॥
[7]रजे रति आगम राव वसंत । नगम्मनि जंग परे बर संत ॥
छं० ॥ १११ ॥

---

(१) मो.-राय विसाल ।
(२) मो.-धाय । (३) ए. कृ. को.-हनैं, हने ।
(४) ए. कृ. को.-"परयौ पुं पीरोज" (५) ए. कृ. को.-नय ।
(६) ए. कृ. को.-विमीर । (७) मो.-रते ।

गही तरवार विपानि सु झारि। नवंतिय वाइस अंत उतारि ॥
पर्‍यौ सम बाज सु हाजमषान। रचे गज इंद्र सु [1]ब्रह्म धियान ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कर्‍यौ मन स्वर तिलत्तिल षग्ग। उड़े रिन [2]पत्तरि तप्पत अग्ग ॥
चढ़े सारूप सु गैवर रूप। छयौ सम सीस धरद्धर भूप ॥ छं० ॥ ११३ ॥
भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ। गिरें दस पंच सहस्सह छाइ ॥
.... । .... छं० ॥ ११४ ॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई।

दूहा ॥ गिरे मेच्छ हिंदू सुभर। हय गय घाइ अघाइ ॥
[3]सुंड रुंड मुंडन झरत। रत्त झाकि झुकि ताइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना।

भिरि तुंअर लिय बग्ग भरि। हय करि नीर प्रवाह ॥
सघन [4]घाइ संमुष [5]समर। लगे मेच्छ पति थाह ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन।

घाइं घाइ तन छाइ छिति। रत्त छिंछ उछ्छंत ॥
भर तोंवर हर जिम तमकि। लग्गि [5]जमन गज अंत ॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भर तोंअर अभि रत्त। धरत कर कुंत जंत अरि ॥
गजन बजज धर ढारि। धरनि बर रत्त जुथ्थ परि ॥
भग्गि मीर काइर कनंक। हिय पत्त [6]मुच्छि [7]द्रढ़ ॥
भग्गि सेन सुरतान। दिष्षि भर सुभर पानि कढ़ ॥
उभ्भारि सिंगि कुंभन छरिय। झरिय श्रोन मद गज ढरिय ॥
हर हरषि हरषि जुग्गिनि सकल। जै जै जै सुर उच्चरिय ॥ छं० ॥ ११८ ॥

---

(१) मो.-ब्रह्म सुधान। (२) मो.- पातरि।
(३) ए. कृ. को.-मुंड। (४) ए.-ससन, कृ. को.-सरन। (५) मो.-जमुन।
(६) ए. कृ. को.-मुट्ठि। (७) मो.-द्रग।

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना।

दूहा ॥ प्रदिपद परिपातह पहर। समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरझि। ससि जिम सङ्कि षिसान ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ।

कवित्त ॥ दिन चतिया बर तुंग। झुक्कि झारन झुकि झुक्किन ॥
हिंदु मेच्छ हय हक्कि। धक बज्जिय भर ढुक्कन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि। झुम्मि झंझरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल। मंस तुट्टत भ्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रुहसि। बिहसि चंद बढ्ढिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगी। रंगि कंक डक्किन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उद्दोत आरनि। सुभर भीर समुष्षं धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर। घाइ कुंजर ढाहि घरहर ॥ छं० ॥१२१॥
स्रोन स्रोन प्रवाह थरहर। अंत अंतन अंत भर हर ॥
[1]तार तान विताल करि करि। तेग षेंचत पाइ परि परि ॥
छं० ॥ १२२ ॥

घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय। अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय। दिष्षि देव विमान छज्जिय ॥
छं० ॥ १२३ ॥

कंपि कायर लज्जि लज्जिय। [2]विकल मुष ह्वै [3]निकलि भज्जिय ॥
समुष तोंवर साह सज्जिय। [4]विचल अरि कर तेग तज्जिय ॥
छं० ॥ १२४ ॥

---

(१) मो.-तार वितान विताल कर कर। (२) ए. कृ. को.-विमल।
(३) ए. कृ.को.-निकरि। (४) ए. विमल।

बीर बहुरि विशेष वानय। छुट्टि छाय अकास भानय॥
रेन सूर दिसान थानय। सोक कोक [1]अलोक आनय॥छं०॥१२५॥

झमकि सुर मुष सस्त्र लग्गिय। दमकि दिसि दिसि षग्ग नग्गिय॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि। ईस सीस [2]भजंत गुरि गुरि॥छं०॥१२६॥

मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय। दलन दोन्न कलोन अच्छिय॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन। गिद्ध जुग लै उड़ी चाइन॥ छं० ॥१२७॥

नषत पित्त मुहत्त फिरि फिरि। मष्पि डोरि पसारि कर धरि॥
रुहिर सर सम बहत धार स। भँवर पंषिन काक पारस॥
छं० ॥ १२८ ॥

मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना।

हनूफाल॥ रंगिय रदनु जुग्गिन बीर। है गै पारि असि [4]वर मीर॥
तोवँर राइ दिष्यौ साहि। नंष्यौ बाज सनमुष आइ॥छं०॥१२९॥

डारिय तेग सिर करि षीज। *गिर पर जनु कि करकिय बीज॥
करि कर धारि गज धर ढाहि। [5]गैवर गिरत निक्करि साहि॥
छं० ॥ १३० ॥

तोंवर दिष्षि राह पहारि। गैंवर दिष्षि है कँध डारि॥
भावरी भग्गि जव्व मेछान। जै जै जै जंपियं चहुआन॥छं०॥१३१॥

मुस्लमान सेना का घबरा कर भाग उठना।

दूहा॥ भग्गि सेन सुरतान सब। रव लग्गी मुष तक्कि॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस। जानि राह ससि बक्क॥ छं० ॥ १३२ ॥

(१) ए. कृ. को.-असोक जानय। (२) मो.-जाति।

* मो.-गिर पर जानु करकिय बीन-पाठ है और ए. कृ. को.-प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय बीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पिठो में छन्दोभंग होता है। (३) ए. कृ. को.-तंतिय।

(४) मो.-चर। (५) मो.-गिर चंत गैवर निकर साह। (६) मो.-पुरिस।

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चक्रित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गन गर सिंधु। करत उच्चार सार मुष ॥
अछि अच्छरि बर इच्छ। विसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल। रज्जि बर [1]तुंड चंड सँग ॥
श्रोन छोनि छय छंछ। गुंज गन देन रत्ति अँग ॥
[2]मुरि मेच्छ घाइ घट सघन परि। हथ्थ घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ। अभै सुभै अंगन घटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहि गोरी सुरतान। अप्प ढिल्ली सँपत्तौ ॥
माह सुकल पंचमी। बार भ्रगु बर दिन वित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह। सहस सत्तह सुभ हैंवर ॥
दुरद षट्ट प्रम्मान। वहै षट रित्त मह भर ॥
कोटेक द्रव्य न्त्रप हेम लिय। घालि सुषासन [3]पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति बेली अमर। सुभत सीस चहुआन किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंवर पहाड़ राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥३७॥

(१) ए. कृ. को.-तंड। (२) मो.-मुरि सेन धाइ मिछ सछन परी।
(३) मो.-पट्ठ।

अथ बरुण कथा लिष्यते ।

(अड़तीसवां समय ।)

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि धर लुट्टै धाइ ॥
अंग नवनि करि उब्बरै । है षुर षग्गह चाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्त्रप । कालंद्री मन आनि ॥
[2]है गै जन सब संग लै । तहां बोले बिप्र ठानि ॥ छं० ॥ २ ॥

सोमेश्वर जीकें साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम ॥ जुषोड़स दान बिचारिय राज । रची विध्रि ज्यौं [3]बध [4]देवति साज ॥
तहां ढिगोसिंघ पँवार पंवित्त । [5]सुध्रम्मय ध्रम्म तहां बिपचित्त ॥
छं० ॥ ३ ॥

जुगौर गुरंवर सिंह सुसंग । जिनै करि जज्जर देहिय जंग ॥
तहां ढिग संजम राव नरिंदु । धरे अनु इंद्र बिराजत [6]चन्द ॥
छं० ॥ ४ ॥

सुबाहन बीर बली कुनि तथ्थ । तिने कलि ध्रम्मन दृजि यकथ्थ ॥
तहां गुर राज [7]बिराजत साम । तिदिष्ट बचिष्ट मनौं ढिग राम ॥
छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ग्रहनी । (२) ए. कृ. को.-होम जग्य ।
(३) ए. कृ. को.-बुध । (४) मो.-देवनी ।
(५) ए कृ. को.-सुधर्मय धूम नहीं वियचित। (६) ए. कृ. को.-इन्द, इन्द्र । (७) मो.-बिरामत ।

सु और अनेक महाभर मंझ। अमंत क्रमंत [1]सयन्तिय संझ ॥छं०॥६॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन।

साटक। मुंदी मुष्य कमोद हंसति कला, चक्रीय [2]चक्रं चितं।
चंदं किरन कढ़ंत पोइन पिमं, भानं कला छीनयं॥
बानं मन्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं।
[3]निद्रा वस्य [4]जगत्त भक्त जनयं, वा जग्य कामी नरं॥ छं० ॥ ७॥

चोटक॥ *चकी चक्क चक्किय चित्त मयं। बिछुरे बिय दिष्षिय संझ मयं॥
†जु पयोध्रिम तत्त मझं मुरबी। सु मनों दिसि दिस्सि सिंदूर [5]जबी॥
छं० ॥ ८॥
घन सोर द्रुमं करि पंष घनं। सु मनों लगि पारसियं पढ़नं॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं। कुलटा बसि छैल रसं विमिदं॥
छं० ॥ ९॥
बिरही जन दिष्टि सु धाम हरी। उलटैं बसि डोरि ज्यौं चंग उरी॥
बजी बर देवल झल्लर झूर। तिसं घरु सिंगिय सिझन पूर॥छं०॥१०॥
[6]कपी मुग धापिय केलि कठौर। मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर॥
छबि दीपक द्वारन जोति जगै। जनु दंपति नैन सुभै उमगै॥
छं० ॥ ११॥
जु लगीं धुअ घुंमर रैनन मंडि। चलै क्रम चोर मगं [7]पियं छंडि॥
‡जुरसे रस चामर सीस इसे। दिपि दीपक जोति पतंग जिसे॥
छं० ॥ १२॥
बिरहा उर झारिय केलि करी। इन दाहिय देहरु प्रीति धरी॥
बिरही चिय मुष्य सु दुष्य [8]सदं। कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं॥
छं० ॥ १३॥

(१) ए. कृ. को-सपन्निय। (२) मो.चक्कीचितं। (३) मो.-निद्रया।
(४) ए. कृ. को. जगंत। *ए. कृ. को.-"कवि चक्क सु चक्किय"।
†ए. कृ. को.-जु पयोध पतंत भझं सुरबी। (५) मो.-बवी।
(६) मो.-किपि। (७) ए. कृ. को.-पिम।
‡ए. कृ. को.-"जुरसे रस बामर दीदक से"। (८) ए. कृ. को.-मुदं।

जु सँजोगय भोग सुषं सरसे। सु कमोदिन चंद फुलै दरसे॥
जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुवं। जु वए मनु काम के बीज भुवं॥
छं० ॥ १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना।

दूहा॥ सांझ समय ससि उग्गि नभ। गइ जामिनि जुग जाम॥
ग्रहन समय दिषि होतही। जमुन पधारे [1]ताम॥ छं०॥ १५॥

वरुण के बीरों का जाग्रत होना।

स्नानं जंकी नौ न्नपति। जल रक्षा जगि बीर॥
[2]हक्कारे संमुष उठे। मंगन जुद्ध [3]सरीर॥ छं०॥ १६॥

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे।

ए बिन्न बस्त्र रु सस्त्र बिन। हस्त दरभ कुस कोस॥
तिल तंदुल जव पुहप कर। बरन दूत उठि रोस॥ छं०॥ १७॥

बीरों का गहरे जल में शब्द करना।

अति प्रचंड गहराइ गल। गल गज्जे बल बीर॥
स्याम बरन भय भीत दिषि। धीरन छुट्टै धीर॥ छं०॥ १८॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त॥ अति उतंग बज्जंग। उदित उर जोति रत्त द्रिग॥
अरुन रुधिर नष अधर। बस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग॥
दसन ऊंच सिर केस। वेस भय भग्गिव पासं॥
अति उनाह जम दाह। कौन मंडै जुध आसं॥
कल कलह बचन किलकंत सुर। सुर बाजत जनु धुनि धमनि॥

(१) मो.- बाम। (२) ए. कृ.- को.-हइकारे।
(३) ए. कृ. को.-समीर।

हम करत केलि जल संचरत। तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि ॥
छं० ॥ १९ ॥

सांमतो का ग्राव पर चला जाना।

दूहा ॥ सुभट दिष्य करि क्रोध उर। भये भयानक सूर ॥
सस्त्र हथ्य दिष्ये नहीं। *ग्राव ग्रहे जलपूर ॥ छं० ॥ २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन।

कवित्त ॥ परत ग्राव जल पूर। झरत जनु रुष्य फल सुबंन ॥
बजत घात आघात। फुरत अवसान बीर तन ॥
रावत्तन अवसान। देव दुंदुभि अधिकारी ॥
[3]जोग ग्यान चय मान। बनिक बुधि मोहि सुनारी ॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह। भुगति जुगति विधि [4]कोबिदह ॥
इत्तनी बत्त अवसान मिलि। मनहु मंच जनु गुन भिदह ॥
छं० ॥ २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन।

आवरि कर वर करह। भिरत भारथ [5]पचारिय ॥
अंग अंग संग्रहहिं। इक इक्कत अधिकारिय ॥
अधम जुद्ध जुरि करहिं। करहिं बल कपट अनंगिय ॥
कबहु धूम वे करहि। करहि कव झार झरन्निय ॥
कब्बहूं मेघ [6]उट्ठें सुजलं। कबहिं करन ग्रावह बरष ॥
उच्चरहिं बैन बहु बीर बर। बिरचि कबहु बुल्लैं हरष ॥ छं० ॥ २२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुमूढ़। (२) ए. कृ. को.-मति।

*ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन नद नदी ग्रावरुद्धं तदब्धम्"। इसका तात्पर्य डेलटा से है।

(३) मो.-ज्यों। (४) मो.-कोबदह।
(५) ए. कृ. को.- परचारिय (६) मो.-वुट्ठे।

जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना ।

कबहुं सस्त्र सर परहिं । कबहुं डक्कैं डक्कारिहिं ॥
तीन लोक तन [1]हकहिं । बकहिं बीरन बंक्कारहिं ॥
अकल कलह बल करहिं । समहि संग्राम सुधारहिं ॥
अजुत जंग उद्धरहिं । *कलह बल धार उघारहिं ॥
सामंत भूमि भंजहिं भिरहिं । गिरहिं परहिं उठ्ठहिं लरहिं ॥
सोमेस ह्वर संक न [2]गनहिं । विरचि गाल गल्ल बल करहिं ॥
छं० ॥ २३ ॥

वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना ।

हम सु भयंकर बल्ल अभूत । सुभटन [3]हक्कारिहिं ॥
हम सु [4]प्रवत्त प्रमान । कनिष्ट अंगुरि उप्पारहिं ॥
हम समुद्र प्रम्मान । डोहि जल पहुमि [5]प्रवाहहिं ॥
देषी सुनी [6]न कोइ । सोइ ब्रह मंडल गावहिं ॥
किन काम धाम तजि वाम सुष । आइ सपत्त जमुनि निसि ॥
चर बेर निसाचर हम फिरहिं । नीर रमैं तिल्ल लेइ धसि ॥
छं० ॥ २४ ॥

वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ।

दूहा ॥ [7]इह कहि के लग्गे लरन । गैन गुंज जल फार ॥
मामह भारथ अंत कौ । भार उतारन हार ॥ छं० ॥ २५ ॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना ।

कवित्त ॥ काल संक अहुरहि । तर बंज्जत प्रहार सुर ॥
जम्मुन [8]जल अंदोल । बीर बोलंत बीर गुर ॥

---

(१) मो.-तकँहि । * कृ. को.-कबहि वीरन वक्काराहिं । (२) मो.-गिनाहिं ।
(३) ए. कृ. को.-हक्कारिय । (४) ए. कृ. को.-चंड प्रव्वत समान ।
(५) मो.-प्रवानाहि । को.-प्रवाहिहि । (६)-न होइ । (७) मो.-एह कहे । (८) मो.-सजन ।

कलह केलि सम केलि। ठेलि कट्टै चावद्दिसि॥
एक ग्राव वरयंत। एक धारंत नष्प कसि॥
परि मुच्छि मध्य विक्रम बलिय। जुद्ध निसाचर विषम [1]ऋषि॥
बर बीर धीर धप्पे लरन। फहु पट्टत न्रप सोम [2]लषि॥छं०॥२६॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरो का वल कम होना और सामतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी॥ तिम [3]तिम सु बीर तामसत थोर। दिन उगन [4]बढ़ै रजपूत जोर॥
वढ्ढै [5]जु मल्ल मुठ्ठी प्रहार। फट्टै कि भूम पट तार तार॥छं०॥२७॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार॥
तरफरहि मध्य जल इनं प्रकार। कपि कोप नंषि गिरि समुद सार॥
छं०॥२८॥
बर भरहिं करहिं लत्तननि हाइ।*बज्जंत बज्र जनु विषम घाइ॥
रन रह वहस्सि उच्चार बैन। इतनैं भयो [6]परताप गैन॥छं०॥२९॥
निसिचरन दिष्षि जब समय सूर। झलमलत किरन त्रिमल करूर॥
तमचरह पूर प्रगटी किरन्न। प्रगटीं सु दिसा विदिसान अन्न॥
छं०॥३०॥
तब लगि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ॥
छं०॥३१॥

प्रातःकाल के वाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा॥ ज्यौं सैसव में जुवन [7]कछु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥
यों निसि मध्यह अरुन कर। उद्दित दिसा [8]लसाइ॥छं०॥३२॥
*रत्ति रही वर विलगि बर। ज्यों ससि कोरह राह॥
हरि डट्टै बाराह धर। कै हरि चंपत राह॥छं०॥३३॥

(१) ए. कृ. को.-पिषि। (२) ए. कृ. को. लिषि।
(३) ए. कृ. को.तिमति। (४) मो.-वढ्ढै। (५) मो.-मुगल।
* मो.-बज्र लेत हथ्थ बम्बू विघाइ। (६) ए. कृ. को.-परमात।
(७) ए. कृ. को.-कव। (८) मो.-ललसाइ। * मो.-"यों रत्ति ही रविलग वर"

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर साहित सब सामंतों का मुर्छित होना।

अरिल्ल ॥ गच्छिय सुद्ध निसाचर बीर। परै धर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
किए तन पान प्रमानन जान। सु देवहि दुंदुभि जानिय गान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सब मुर्छित पड़े हुइ थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना।

दूहा ॥ मृतक समानति मृतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लगि तहँ प्रथिराज रन। आन्नि सपत्त [1]पान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना।

साटक ॥ [2]सोहिष्यं न्वप राज तात निजयं। बीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिंछ रुद्ध तनयं, रुद्रं सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, [3]हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज चिंतेति तनयं, पुच्छै गुरं [4]ततगुरं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ बांध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा ॥ जमुन सनंमुष जोर कर। अस्तुति मंडिय मुष्य ॥
तूं माता दुष भंजनी। रंजन सेवक सुष्य ॥ छं० ॥ ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो मात मातंग [5]सूरज्ज जाया। नमो देवि भग्नी जमं पै [6]कहाया॥
जगं अंधकूपं सु दीपक्क गव्वी। नदी कौन [7]पुज्जै सु तेरी करव्वी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रान। (२) ए. कृ. को.- सो दिष्षं।
(३) ए. कृ. को.-हालीं। (४) ए. कृ. को.-सद्गुरं, तद्गुरं। (५) मो.-सूरिज्ज।
(६) ए. कृ.को.-कहाये। (७) मो.-पूजै।

महा ध्रम्म धारन्न तारन्न देही। निकस्सी सलीलं सु सेलं समेही ॥
बलीभद्र रष्षी हरष्षी हलंदी। तुअं नाम पासं सुभै सो कलंदी ॥
छं० ॥ ३० ॥

त्रयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं सेसु नंमं सरन्नी ॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्नि पापं। तुहीं मात [1]करनी अघं कष्ट कायं॥
छं० ॥ ४० ॥

तुही याम स्हरं जलं मुक्ति धारा। तुही नभ्भ मातंग नर लोग सारा ॥
तुहीं साधवी मात नष्षं समानी। तुहो तारनं लोक त्रैलोक रानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

तुही बाल बेसं तुही वृद्ध काली। तुही तापसं ताप आपं सुराली ॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [2]तिद्ध सिद्धं। तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं॥
छं० ॥ ४२ ॥

तुही [3]महनं मथ्यनं तेज धारा। तुहीं देवता देव त्रय लोक हारा॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [4]में कंप राषंत आलं
छं० ॥ ४३ ॥

तुही विस्न रूपं तुहि विस्न माया। तुही तारनं जन्न संसार आया॥
कियौ अश्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै ॥
छं० ॥ ४४ ॥

तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं। करै अर्घ [5]आचार उग्गंत स्हरं ॥
तनं तम्मनं तं जयं निर्विकारी। इसी जमुन [6]अप्पं सदिष्षी अकारी
छं० ॥ ४५ ॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना।

कवित्त ॥ गंगा मूरति विसन। ब्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
जमुना मूरति ईस। दिव्य दैवन मुनि थप्पिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त।
(२) ए. कृ. को.-"सिद्धं सिद्धंति"।
(३) मो.-महंत।
(४) ए. कृ. को.-में कप्प।
(५) ए.-आवार।
(६) ए. कृ. को.-अप्पं।

मिली जाइ [1]झल मंग । गंग सागर अवधारिध ॥
ता सोमेसर रोग । दोष दोषह तब टारिय ॥
अब सुभट सहित देवी सु तन । करि निरमल तन मोह मय ॥
इह कहत जग्गि न्रप मूरछा । प्रति बुल्लौ प्रथिराज तय ॥छं०॥४६॥

सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना ।

साटक ॥ [2]त्वं मे देह सु भाजनेव [3]सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
दाहं अग्गि सु क्रम्म दारुन धरै आवस्य [4]बंदं करं ॥
सं रुद्धं जम जोग तिष्टत तनै अर्द्धं पलं मध्ययं ॥
जीवी वारि तरंग चंचल धियं बिस्सत [5]अस्र्न्तरं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिलं पंषी वरं [6]सुद्धयं ॥
सुष्पं दुष्पय मध्य इच्छ तवयं साषास्य चै गुन्नयं ॥
मोहं पत्तय रत्त इन्नव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
एकश्रय सँतोष दोष तिगुना अस्याय वा निर्गुनं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
यों भूतं आभूत बर्ष सु सतं आयुर्बलं अदभुतं ॥
तेषा अर्द्धं निसा गतं रवि उभै बाल्यं च वृद्ध गता ॥
प्राप्तं जोवन रत्त मत्तयं रसं व्याधं क्रुधं बंधनै ॥
ना भूतं संसार तारन गुन्नै [7]संभार निस्तारयं [8]॥ छं० ॥ ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना ।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय । भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामंत सब । जगे मूरछा एव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गंध्रव मंच सुइष्ट [9]जिय । आराध्यौ प्रथिराज ॥
[9]बरुन दोष तन ताप गय । उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जल गंग । (२) ए. कृ- को.-त्वमे । (३) ए.-संसी ।
(४) ए. कृ. को.-सबदं । (५) ए. कृ. को.-नर । (६) मो.सुठयं ।
(७) मो.-संसार । (८) ए. कृ. को. हुअं । (९) ए. कृ. को.-वरन ।

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि जाइ। जानंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ। निसि समय बरुन तन धरिय पाइ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरवरिय केलि सोइत्त [1]आइ। पाताल ईस कीलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [2]ध्याइ। उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

भौसेन तब्ब तहँ एक ठाइ। करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किन्नह पराइ। भए सुद्ध पाय गएं तन [3]पुलाय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सोमइवर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना।

दूहा ॥ बरुन दोष मेंट्यौ सुप्रथु। ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम नृप। फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके वरूण कथा नाम अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम्.॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-पाइ, कृ. को.- धाइ। (३) ए. कृ. को.-फुलाइ।

अथ सोमबध सम्यो लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

कवित्त ॥ गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम महाबल्ल ॥
कोइ न चंपै सीम । कित्ति बर रीति अचंगल्ल ॥
सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तस [1]अंतर बल्लै ॥
मिलि मंत तत्त बुज्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछ्रच मंडोति रज ॥ छं० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी ॥ संभरिय राज गुज्जर नरेस । रत्तौ जु साम दानह [2]असेस ॥
[3]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रष्षै इलास ॥छं०॥२॥
चंपौ जु अप्प उर रषैं डंस । मन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [4]षेल । चालुक्क चित्त इम [5]मिलन सेल ॥
छं० ॥ ३ ॥
कुलटा छयल्ल जिम मिलन हेत । इम षगन षेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राहु केत । कलमलिय चलिय उर भीम तेत ॥
छं० ॥ ४ ॥
रानंग देव झाला नरिंद । बुल्यौ सु राइ चालुक्क इंद ॥
[6]तमि कह्यौ ताम हौ इतत रोस । झलहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस ॥
छं० ॥ ५ ॥
बुल्लाइ सब्ब भर इक्क ठौर । चढ़िवाइ बेगि बर करौ दौरि ॥
षेलंत नारि नर लेइ गड्ढ । इम लेउ भूमि षल षग्ग बड्ढि ॥छं०॥६॥

---

(१) मो.-अंबर । (२) ए. कृ. को.-अरेस । (३) मो.-काल्यंद ।
(४) ए. कृ. को.-प्रेत । (५) ए. कृ. को.-मलन । (६) मो.-मत ।